श्रीहरिः

श्रीराधा-माधव-रस-सुधा

[षोडशगीत]

महाभाव-रसराज-वन्दना

दोउ चकोर, दोउ चंद्रमा, दोउ अलि, पंकज दोउ ।
दोउ चातक, दोउ मेघ प्रिय, दौउ मछरी, जल दोउ ॥
आस्रय-आलंबन दोउ, बिषयालंबन दोउ ।
प्रेमी-प्रेमास्पद दोउ तत्सुख-सुखिया दोउ ॥
लीला-आस्वादन-निरत महाभाव-रसराज ।
बितरत रस दोउ दुहुन कौं, रचि बिचित्र सुठि साज ॥
सहित बिरोधी धर्म-गुन जुगपत नित्य अनंत ।
बचनातीत अचिंत्य अति, सुषमामय श्रीमंत ॥
श्रीराधा-माधव-चरन बंदौं बारंबार ।
एक तत्त्व दो तनु धरैं, नित-रस-पारावार ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग मालकोस—तीन ताल)

राधिके ! तुम मम जीवन-मूल ।
अनुपम अमर प्रान-संजीवनि, नहिं कहुँ कोउ समतूल ॥
जस सरीर में निज-निज थानहिं सबही सोभित अंग ।
किंतु प्रान बिनु सबहि ब्यर्थ, नहिं रहत कतहुँ कोउ रंग ॥
तस तुम प्रिये ! सबनि के सुख की एक मात्र आधार ।
तुम्हरे बिना नहीं जीवन-रस, जासौं सब कौ प्यार ॥
तुम्हरे प्राननि सौं अनुप्रानित, तुम्हरे मन मनवान ।
तुम्हरौ प्रेमसिंधु-सीकर लै करौं सबहि रसदान ॥
तुम्हरे रस-भंडार पुन्य तैं पावत भिच्छुक चून ।
तुम सम केवल तुमहि एक हौ तनिक न मानौ ऊन ॥
सोऊ अति मरजादा, अति संभ्रम-भय-दैन्य-सँकोच ।
नहिं कोउ कतहुँ कबहुँ तुम-सी रसस्वामिनि निस्संकोच ॥
तुम्हरौ स्वत्व अनंत नित्य, सब भाँति पूर्न अधिकार ।
कायव्यूह निज-रस-बितरन करवावति परम उदार ॥
तुम्हरी मधुर रहस्यमई मोहनि माया सौं नित्य ।
दच्छिन बाम रसास्वादन हित बनतौ रहूँ निमित्त ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

हे प्यारी राधिके ! तुम मेरे जीवनकी मूरि हौ, मेरे प्रानन की अनुपम अमर संजीवनी हौ। तुम्हारे समान कोऊ दूसरी कहूँ नायँ है। जैसे सरीर में अपनी-अपनी ठौर पै सगरे अंग सोभा देय हैं, परंतु प्रानन बिना सब कछू बेकार है, सगरे अंग फीके—सोभाहीन हैजायँ हैं, तैसैंई हे प्यारी ! सबरेन के सुख की एकमात्र आधार तुम ही हौ। तुम्हारे बिना जीवन में रस नायँ रहि जाय है, जा (जीवन) के ताईं सब कोई प्यार करै है। मेरे प्रान तुम्हारे प्रानन तेई संचालित रहैं हैं; तुम्हारे मन तेई मैं मनवान बन्यौ हूँ—तुम्हारे मन तेई मेरे मन की सत्ता है। तुम्हारे प्रेमरूपी समुद्र की एक बूँद कूँ लैकैंई मैं सबन कूँ रसदान करूँ हूँ। तुम्हारे पुन्यमय—पवित्र रस-भंडार तेई सगरे भिच्छुक चून—रस-कन पावैं हैं—सबकूँ रस वहीं ते मिलै है; तुम्हारे समान तौ एकमात्र तुम ही हौ, या में तुम नैकहू कसर मती समझौ। या प्रकार मैं तुम्हारेई रस-भंडार मैंते रसदान करूँ हूँ; परंतु वामें बड़ी ही मरजादा, बड़ौ संजम, भय, दीनता, अरु संकोच बन्यौ रहै है (मुक्त-हस्त ते—उदारतापूर्वक नाय कर सकूँ।) तुम-जैसी संकोच छोड़ि कैं रस बाँटिबेवारी रस की स्वामिनी तौ एक तुम ही हौ, दूसरौ कहूँ कोऊ कबहूँ नायँ। फेर, मोपै तौ सदाईं तुम्हारौ अनन्त स्वत्व है—कबहूँ नायँ फूटै, ऐसौ हक है। (मैं तौ नित्य तुम्हारी ही सम्पत्ति हूँ) यातै मोपै सब ही प्रकार ते तुम्हारौ पूरौ अधिकार है। (याही सौं मो कूँ निमित्त बनाय कैं) तुम अपनी कायव्यूहरूपी—अंगस्वरूपा गोपीजनन के द्वारा परम उदार हैकैं खुले हाथन रस-कौ बितरन करवावौ हौ—रस बँटवावौ हौ। मैं तौ येई चाहूँ हूँ कि तुम्हारी रहस्यमई, मेरे जीवन कूँ सदा मुग्ध राखिबेवारी मीठी माया के—रसमई प्रीति के बस भयौ मैं तुम्हारे दच्छिन और बाम दोनों प्रकार के भावन के रसास्वादन में निमित्त बनतौ रहूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग रागेश्वरी—ताल दादरा)

हौं तो दासी नित्य तिहारी ।
प्राननाथ जीवन धन मेरे, हौं तुम पै बलिहारी ॥
चाहें तुम अति प्रेम करौ, तन-मन सौं मोहि अपनाऔ ।
चाहें द्रोह करौ, त्रासौ, दुख देइ मोहि छिटकाऔ ॥
✓ तुम्हरौ सुख ही है मेरौ सुख, आन न कछु सुख जानौं ।
जो तुम सुखी होउ मो दुख में, अनुपम सुख हौं मानौं ॥
सुख भोगौं तुम्हरे सुख कारन, और न कछु मन मेरे ।
तुमहि सुखी नित देखन चाहौं निसि-दिन साँझ-सवेरे ॥
✓ तुमहि सुखी देखन हित हौं निज तन-मन कौं सुख देऊँ ।
तुमहि समरपन करि अपने कौं नित तव रुचि कौं सेऊँ ॥
तुम मोहि 'प्रानेस्वरि', 'हृदयेस्वरि', 'कांता' कहि सचु पावौं ।
यातैं हौं स्वीकार करौं सब, जद्यपि मन सकुचावौं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(२)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

हे प्राननाथ ! मैं तौ तुम्हारी नित्य दासी, सदाँ की चेरी हूँ। तुम मेरे प्रानन के स्वामी तथा जीवन-सर्वस्व हौ, मैं तुम पै बलिहारी हूँ—न्योछावर हूँ। चाहें तुम मोसूँ अत्यन्त प्रेम करौ, सरीर और मन सूँ मोकूँ अंगीकार करौ अथवा द्रोह करौ, त्रासौ, दुख दैकैं मोकूँ छोड़-छिटकाय देऔ। तुम्हारौ सुख ही मेरौ सुख है, दूसरौ कोऊ सुख मैं रंचमात्र नायँ जानू। जो तुम मेरे दुख में सुख कौ अनुभव करौ तौ (तुम कूँ सुखी देखि कैं) मैं इतने महान सुख कौ अनुभव करूँ, जाकी कहूँ तुलना नायँ। मैं जो सुख विलसूँ हूँ, सोऊ तुम्हारे सुख के कारन ही, मेरे मन-में दूसरे सुखकी कल्पनाहू नायँ। मैं तुम कूँ नित्य—साँझ सौं सबेरे ताईं और सबेरे ते साँझ ताईं—रात-दिनाँ सुखी देखनौ चाहूँ हूँ। तुमकूँ सुखी देखिबे के ताईं ही मैं अपने सरीर और मन कूँ सुखी राखूँ हूँ—मोकूँ सुखी देखि कैं तुमकूँ सुख होय है, याई कारन मैं सरीर और मन ते सुखी रहूँ हूँ। अपने-आप कूँ तुम्हारे अरपन करि कैं मैं सदा तुम्हारी रुचि कौई सेवन करूँ हूँ। तुम मो कूँ प्रानेस्वरी, हृदय की स्वामिनी, कान्ता (प्यारी) कहि कैं फूले नायँ समाऔ, याई ते मैं इन सम्बोधनन कूँ स्वीकार कर लऊँ हूँ, ग्रहण कर लऊँ हूँ, जद्यपि इन सब्दन कूँ सुनि कैं मो कूँ बहुत संकोच होय है—संकोच के मारें मैं गड़ि जाऊँ हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(३)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग भैरवी—तीन ताल)

हे आराध्या राधा ! मेरे मनका तुझमें नित्य निवास ।
तेरे ही दर्शन कारण मैं करता हूँ गोकुलमें वास ॥
तेरा ही रस-तत्त्व जानना, करना उसका आस्वादन ।
इसी हेतु दिन-रात घूमता मैं करता वंशीवादन ॥
इसी हेतु स्नानको जाता, बैठा रहता यमुना-तीर ।
तेरी रूपमाधुरीके दर्शनहित रहता चित्त अधीर ॥
इसी हेतु रहता कदम्बतल, करता तेरा ही नित ध्यान ।
सदा तरसता चातककी ज्यौं, रूप स्वातिका करने पान ॥
तेरी रूप-शील-गुण माधुरि मधुर नित्य लेती चित चोर ।
प्रेमगान करता नित तेरा, रहता उसमें सदा विभोर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(३)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

हे आराध्या राधा ! मेरौ मन सदा—दिन-रात तोही में बस्यौ रहै है। तेरौ दरसन मो कूँ मिल्तौ रहै, याई लोभ सौं मैं गोकुल में बसि रह्यौ हूँ। तेरेई रस के तत्त्व कूँ जानिवे और वाकौ आस्वादन करिवे के ताईं मैं बाँसुरी बजाँवतौ रात-दिनाँ इत-उत घूमतौ डोलूँ हूँ। याई के ताईं मैं अस्नान करिबे कूँ जमुना पै जायौ करूँ और वाके तीर पै बैठ्यौ रहूँ हूँ। तेरी रूप-माधुरी के दरसन करिबे के ताईं मेरौ चित्त बेचैन रहै है। याई कारन मैं कदम तरें बन्यौ रहूँ और नित्य तेरौ ध्यान—तेरौई चिंतवन करतौ रहूँ हूँ। तेरी रूपछटारूप स्वाती के जल कौ पान करिबे के ताईं मैं पपीहा की नाईं कहा सदा तरसतौ रहूँ—छटपटातौ रहूँ हूँ। तेरे मोहक रूप, सील-सुभाव तथा गुनन की मधुरता (बरबस) मेरे चित्त कूँ चुराय लेय है। याई सौं मैं नित्य तेरे प्रेम कौ बखान करतौ भयौ वाई के गान में बिमोर—अपने कूँ भूल्यौ रहूँ हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(४)

श्रीराधाके प्रेमोद्‌गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग भैरवी—तीन ताल)

मेरी इस विनीत विनतीको सुन लो हे व्रजराजकुमार !
युग-युग, जन्म-जन्ममें मेरे तुम ही बनो जीवनाधार ॥
पद-पङ्कज-परागकी मैं नित अलिनी बनी रहूँ, नँदलाल !
लिपटी रहूँ सदा तुमसे मैं, कनकलता ज्यों तरुण तमाल ॥
दासी मैं हो चुकी सदाको, अर्पणकर चरणोंमें प्राण ।
प्रेम-दामसे बँध चरणोंमें, प्राण हो गये धन्य महान ॥
देख लिया त्रिभुवनमें बिना तुम्हारे और कौन मेरा ।
कौन पूछता है 'राधा' कह, किसको राधाने हेरा ॥
इस कुल, उस कुल—दोनों कुल गोकुलमें मेरा अपना कौन ?
अरुण मृदुल पदकमलोंकी ले शरण अनन्य, गयी हो मौन ॥
देखे बिना तुम्हें पलभर भी मुझे नहीं पड़ता है चैन ।
तुम ही प्राणनाथ नित मेरे, किसे सुनाऊँ मनके बैन ॥
रूप-शील-गुणहीन समझकर कितना ही दुतकारो तुम ।
चरणधूलि मैं, चरणोंमें ही लगी रहूँगी, बस हरदम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(४)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

मेरी या नम्र वीनती कूँ, हे व्रजराजकुमार ! तुम ध्यान दै कैं सुनि लीजौं। जुग-जुगांतरमें, जनम-जनममें तुम ही मेरे जीवनके आधार बने रहौ—याई मैं चाहूँ हूँ। तुम्हारे चरन-कमल के पराग की, हे नंदलाल ! मैं निल्य भ्रमरी बनी रहूँ—उन पै मँडराती डोलूँ। इतनौई नायँ, जैसैं सोनेकी बेल नवीन तमाल के बृच्छ सौं सदाँ लिपटी रहै, वाई प्रकार मैं हूँ तुम्हारे श्रीअङ्ग ते सटी रहूँ। तुम्हारे चरनन पै अपने प्रानन कूँ न्योछावर करि कैं मैं सदाँ के ताईं तुम्हारी चेरी बनि चुकी हूँ—नायँ-नायँ, प्रेम की डोरी सौं तुम्हारे चरनन मैं बँधि कैं मेरे ये प्रान अत्यन्त धन्य है गए। मैंने परिच्छा करि कैं देख लीनी, त्रिलोकी में तुम कूँ छोड़ि कैं मेरौ और कौन है—कोऊ नायँ। 'राधा' नाम लैकैं दूसरौ कौन मो कूँ टेरै है और मो राधाकी हू दृष्टि और कौन की माऊँ गई है ? मेरे पीहर में और सासुरे मैं—दोनों परिवारन में या गोकुल (व्रज) में मेरौ सगौ कौन है—कोऊ नायँ। एकमात्र तुम्हारे लाल-लाल सुकुमार चरन-कमलन कौ आसरौ लैकैं मैं मौन है गई हूँ। तुम कूँ देखे बिना मो कूँ एक पलहू चैन—सांति नायँ मिलै। कारन, सदा के लिएँ तुम ही मेरे प्रानन के स्वामी हौ, तुम कूँ छाड़ि कैं और कौन कूँ अपने मन की बात सुनाऊँ ? रूप, सील-सुभाव तथा गुनन ते हीन समुझि कै तुम मो कूँ कितनौहू दुतकारौ, मैं तौ तुम्हारे चरनन की रज हूँ और हर छन चरनन मेंई चिपटी रहूँगी—बस, इतनी बात जानूँ हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(५)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग परज—तीन ताल)

हे वृषभानुराज-नन्दिनि ! हे अतुल प्रेम-रस-सुधा-निधान !
गाय चराता वन-वन भटकूँ, क्या समझूँ मैं प्रेम-विधान ॥
ग्वाल-बालकोंके सँग डोलूँ, खेलूँ सदा गँवारू खेल ।
प्रेम-सुधा-सरिता तुमसे मुझ तप्त धूलका कैसा मेल ?
तुम स्वामिनि अनुरागिणि ! जब देती हो प्रेमभरे दर्शन ।
तब अति सुख पाता मैं, मुझपर बढ़ता अमित तुम्हारा ऋण ॥
कैसे ऋणका शोध करूँ मैं, नित्य प्रेम-धनका कंगाल ।
तुम्हीं दया कर प्रेमदान दे मुझको करती रहो निहाल ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(५)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

हे वृषभानु राजा की बेटी ! हे प्रेम-रस-सुधा की अनुपम खानि ! मैं तौ गाय चराँवतौ बन-बन में भटकतौ रहूँ हूँ; मैं भला, प्रेम की रीति-नीति—प्रेम कैसैं कियो जाय है, सो कैसैं जानूँ । मैं तो ग्वाल-बालन के संग डोल्यौ करूँ, तथा सदाँ गँवारू खेल खेलतौ रहूँ हूँ । तुम तौ प्रेमरूपी अमृतकी सरिता हौ और मैं तपी भई बारू हूँ। मेरौ तुम्हारे साथ कहा मेल है । हे अनुरागभरी स्वामिनी ! जबहू तुम मो कूँ प्रेमभरे दरसन देऔ हौ वा छन मो कूँ अपार सुख कौ अनुभव होय है और मो पै तुम्हारौ रिन अपार बढ़ि जाय है । मैं तौ सदाईं प्रेम-धन कौ कंगाल हूँ, तब मैं तुम्हारे या अत्यन्त बढ़े भए रिन कूँ कैसैं चुकाय सकूँ हूँ । तुम दया की खानि हौ, तुमहीं प्रेम कौ दान दैकैं मो कूँ निहाल—कृतार्थ करती रहौ, याई मेरी बीनती है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(६)

श्रीराधाके प्रेमोद्‌गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग परज—तीन ताल)

सुन्दर श्याम कमल-दल-लोचन, दुखमोचन ब्रजराजकिशोर ।
देखूँ तुम्हें निरन्तर हिय-मन्दिरमें हे मेरे चितचोर ! ॥
लोक-मान-कुल-मर्यादाके शैल सभी कर चकनाचूर ।
रक्खूँ तुम्हें समीप सदा मैं, करूँ न पलक तनिक भर दूर ॥
पर मैं अति गँवार ग्वालिनि, गुणरहित, कलंकी सदा कुरूप ।
तुम नागर गुण-आगर अतिशय, कुलभूषण सौन्दर्य-स्वरूप ॥
मैं रस-ज्ञान-रहित, रसवर्जित तुम रसनिपुण, रसिक सिरताज ।
इतनेपर भी दयासिन्धु ! तुम मेरे उरमें रहे विराज ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(६)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

कमल-जैसे नेत्रनवारे स्यामसुंदर ! हे दुःख ते छुड़ायवेवारे व्रजराज-किसोर ! हे मेरे चितचोर ! मैं तुम कूँ अपने हृदयरूप भवन में निरंतर—विना अटक के निहारती रहूँ। मेरौ मन चाहै है कि लोकलाज, इज्जत-आवरू तथा कुल की मरजादारूप सवरे पहारन कूँ चकनाचूर करि कैं मैं तुम कूँ सदाईं अपने ढिंग वनाये राखूँ, एक पलकहू नैकहू दूर नायँ रहिवे दऊँ। परंतु मैं तो निरी गँवार ग्वारिनी हूँ, गुनन ते रीती, कलंकिनी और सदाईं कुरूपा हूँ। याके विपरीत तुम अत्यन्त चतुर, गुनन के भंडार, कुल के महान भूषन तथा सुंदरता के स्वरूप ही हौ। कहाँ मैं रस के ग्यान ते सर्वथा सून्य, रसहीन, और कहाँ तुम रस के मर्मग्य तथा रसिकन के सिरमौर हौ। इतनेहू पै तुम दया के सागर ! (मो पै दया करिकैईं) हृदय में सदाँ वसे रहौ हौ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
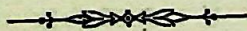
(७)
श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग भैरवी तर्ज—तीन ताल)

हे प्रियतमे राधिके ! तेरी महिमा अनुपम, अकथ, अनन्त ।
युग-युगसे गाता मैं अविरत, नहीं कहीं भी पाता अन्त ॥
सुधानन्द बरसाता हियमें तेरा मधुर वचन अनमोल ।
बिका सदा के लिये मधुर दृग-कमल, कुटिल भ्रुकुटीके मोल ॥
जपता तेरा नाम मधुर अनुपम, मुरलीमें नित्य ललाम ।
नित अतृप्त नयनोंसे तेरा रूप देखता अति अभिराम ॥
कहीं न मिला प्रेम शुचि ऐसा, कहीं न पूरी मनकी आश ।
एक तुझीको पाया मैंने, जिसने किया पूर्ण अभिलाष ॥
नित्य तृप्त निष्काम नित्यमें मधुर अतृप्ति, मधुरतम काम ।
तेरे दिव्य प्रेमका है यह जादूभरा मधुर परिणाम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(७)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

हे प्रियतमे राधिके ! तेरी महिमा उपमा-रहित कहिबे में नायँ आवै ऐसी और अपार है। मैं जुग-जुगांतर सूँ बिना बिराम लिएँ वाकौ गान करतौ आय रह्यौ हूँ, तौऊ वाकौ कहूँ अंत—ओर-छोर नायँ मिलै। तेरे मधुर अनमोल बोल मेरे हृदय में अमृत-सरीखौ आनंद बरसायौ करैं हैं। तेरे कमल-से मधुर नेत्र तथा बाँकी भौंह के मोल मैं सदाँ के लिएँ बिकि गयौ हूँ। अपनी मुरली में मैं तेरे उपमा-रहित मधुर एवं श्रेष्ठ नामकी रात-दिनाँ रट लगायौ करूँ हूँ और अतृप्त नेत्रन सूँ तेरे अत्यन्त मनोहर रूप कूँ निहारतौ रहूँ हूँ। तेरे-जैसो निर्मल प्रेम मो कूँ कहूँ नायँ मिल्यौ, कहूँ मेरे मन की आसा पूरन नायँ भई। एकमात्र तूही मो कूँ ऐसी मिली है, जाने मेरी अभिलाखा पूरन करी है। मैं (अपने ही आनन्द सूँ) नित्य तृप्त रहिबेवारौ और सदा निष्काम—कामनाहीन हूँ। ऐसे मोमें मधुर अपरिमित अतृप्ति और अत्यन्त मधुर अपरिमित कामना जगाय देनौ—ये तेरे अलौकिक प्रेम कौई जादूभरयौ मधुर फल है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(८)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग भैरवी तर्ज—तीन ताल)

सदा सोचती रहती हूँ, मैं क्या दूँ तुमको, जीवनधन ?
जो धन देना तुम्हें चाहती, तुम ही हो वह मेरा धन ॥
तुम ही मेरे प्राणप्रिय हो, प्रियतम ! सदा तुम्हारी मैं ।
वस्तु तुम्हारी तुमको देते पल-पल हूँ बलिहारी मैं ॥
प्यारे ! तुम्हें सुनाऊँ कैसे अपने मनकी सहित विवेक ।
अन्योंके अनेक, पर मेरे तो तुम ही हो, प्रियतम ! एक ॥
मेरे सभी साधनोंकी बस, एकमात्र हो तुम ही सिद्धि ।
तुम ही प्राणनाथ हो बस, तुम ही हो मेरी नित्य समृद्धि ॥
तन-धन-जनका बन्धन टूटा, छूटा भोग मोक्षका रोग ।
धन्य हुई मैं प्रियतम ! पाकर एक तुम्हारा प्रिय संयोग ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(८)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

हे जीवनधन ! मैं सदा सोचती रहूँ हूँ कि तुम कूँ कहा दऊँ। जो धन मैं तुम कूँ देनौ चाहूँ हूँ, वो मेरौ धन तौ तुम ही हौ। तुम ही मो कूँ प्राननहू ते प्यारे हौ और हे प्रियतम ! मैं सदा तुम्हारी हूँ । तुम्हारी ही वस्तु तुम कूँ देती भई मैं पल-पल तुम पै बलिहारी—न्योछावर हूँ। हे प्यारे ! मैं अपने मन की बात विवेकपूर्वक—होस-हवासमें तुम ते कैसैं कहूँ । औरन के तौ अनेक हैं, परंतु मेरे तौ हे प्रियतम ! तुम एक ही हौ । ज्यादा कहा कहूँ, मेरे सबरे साधनन की सिद्धि—सफलता एकमात्र तुम ही हौ। तुम ही मेरे प्राननाथ हौ और तुम ही मेरी स्थिर सम्पत्ति हौ—केवल इतनी बात मैं जानूँ हूँ। देह, धन और परिवार कौ बंधन टूटि गयौ, भोग और मोक्ष कौ रोगहू मिटि गयौ। एक तुम्हारौ प्यारौ संजोग—मिलन पाय कैं हे प्रियतम ! मैं धन्य-धन्य हैगई ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(९)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग गूजरी—ताल कहरवा)

राधे, हे प्रियतमे, प्राण-प्रतिमे हे मेरी जीवन मूल ।
पल भर भी न कभी रह सकता, प्रिये मधुर ! मैं तुमको भूल ॥
श्वास-श्वासमें तेरी स्मृतिका नित्य पवित्र स्रोत बहता ।
रोम-रोम अति पुलकित तेरा आलिङ्गन करता रहता ॥
नेत्र देखते तुझे नित्य ही, सुनते शब्द मधुर यह कान ।
नासा अङ्ग-सुगन्ध सूँघती, रसना अधर-सुधारस-पान ॥
अङ्ग-अङ्ग शुचि पाते नित ही तेरा प्यारा अङ्ग-स्पर्श ।
नित्य नवीन प्रेम-रस बढ़ता, नित्य नवीन हृदयमें हर्ष ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(९)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

हे राधे ! हे प्रियतमे ! हे मेरे प्रानन की पूतरी ! हे मेरी जीवन-मूरि ! हे प्रिये ! मधुरातिमधुर तो कूँ बिसारि कैं मैं काहू छिन पलकहू नायँ रहि सकूँ हूँ। स्वास-स्वास में तेरी याद कौ पवित्र झरना बह्यौ करै है। मेरौ रोम-रोम अत्यन्त पुलकित ह्वैकैं नित्य-निरन्तर तेरौ आलिंगन करतौ रहै है। मेरे नेत्र नित्य तोई कूँ निरखते रहैं हैं और ये कान तेरेई मधुर-मनोहर बोल सुनते रहैं हैं। मेरी नासिका तेरेई अंगन ते निकसिबेवारी परम मनोहर सुगन्ध कूँ सूँघती रहै है और रसनां तेरेई अधरन के सुधामय रस कौ पान करती रहै है। मेरौ एक-एक अवयव तेरे प्यारे अंगन कौ स्पर्श पाय कैं नित्य पवित्र होतौ रहै है। तेरे प्रेम कौ रस (स्वाद) नित्य नयो बढ़तौ रहै है और वाके संग मेरे हृदय में हर्षहू नित्य नयौ बढ़तौ रहै है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग गूजरी—ताल कहरवा)

मेरे धन-जन-जीवन तुम ही, तुम ही तन-मन, तुम सब धर्म ।
तुम ही मेरे सकल सुखसदन, प्रिय निज जन, प्राणोंके मर्म ॥
तुम्हीं एक बस आवश्यकता, तुम ही एकमात्र हो पूर्ति ।
तुम्हीं एक सब काल, सभी विधि हो उपास्य शुचि सुन्दर मूर्ति ॥
तुम ही काम-धाम सब मेरे, एकमात्र तुम लक्ष्य महान ।
आठों पहर बसे रहते तुम मम मन-मन्दिरमें भगवान ॥*
सभी इन्द्रियोंको तुम शुचितम करते नित्य स्पर्श-सुख-दान ।
बाह्याभ्यन्तर नित्य निरन्तर हो छेड़े रहते निज तान ॥
कभी नहीं तुम ओझल होते, कभी नहीं तजते संयोग ।
घुले-मिले रहते करवाते करते निर्मल रस-संभोग ॥
पर इसमें न कभी मतलब कुछ मेरा तुमसे रहता भिन्न ।
हुए सभी संकल्प भङ्ग मैं-मेरेके समूल तरु छिन्न ॥
भोक्ता-भोग्य सभी कुछ तुम हो, तुम ही स्वयं बने हो भोग ।
मेरा मन बन सभी तुम्हीं हो अनुभव करते योग-वियोग ॥

---

* (दूसरा पाठ) आठों पहर सरसते रहते तुम मन सर-वर में रसवान ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

हे प्रानप्रियतम ! मेरौ धन, परिवार तथा जीवन तुम ही हौ; तुम ही मेरी देह और मन हौ; तुम ही संपूर्ण धर्म हौ। तुम ही मेरे सगरे सुखन की खानि हौ। तुम ही प्रिय निजजन और तुम ही प्रानन के मर्म—आधार हौ। अधिक कहा कहूँ; तुम ही मेरी एकमात्र आवश्यकता हौ और तुम ही वाकी एकमात्र पूर्ति हौ। तुम ही सब समै और सब रीति ते मेरे लिएँ उपासना करिवे जोग्य पवित्र और मधुर मनोहर मूर्ति हौ। तुम ही मेरे सगरे काम और घर हौ और तुम ही मेरे एकमात्र महान् लक्ष्य हौ। आठ पहर तुम मेरे मनरूपी मंदिर में भगवान्—इष्टदेव के रूप में बसे रहौ हौ *! तुम मेरी सगरी इंद्रीन कूं नित्य पवित्रतम स्पर्श-सुख कौ दान करते रहौ हौ। मेरे भीतर और बाहर तुम सदा अविराम अपनी मधुर तान छेरयौ करौ हौ। तुम कबहूँ मेरे नेत्रन ते दूर नायँ होऔ और एक पलकहू संजोग कूँ नाय तजौ हौ, और घुरे-मिले रहि कैं पवित्र रस कौ संभोग करते और करवाँवते रहौ हौ। परंतु यामें मेरौ तुम ते भिन्न कबहूँ कछू दूसरौ अभिप्राय नायँ रहै। मेरे सगरे संकल्प भंग हैगए और अहंकार तथा ममता के रूख जरि सौं कटि गए। भोगिवेवारे और भोगिबे की वस्तु—जब कछू तुम ही हौ और तुम ही स्वयं भोग की क्रिया बने हौ और मेरौ मन बनि कैं तुम ही संजोग और वियोग कौ अनुभव करयौ करो हौ।

---

* दूसरे पाठके अनुसार अर्थ—

आठ पहर तुम मेरे मनरूपी सरोवर में रसवान—अखिल-रस-सुधा-सम्पन्न रूप में सरसवै रहौ हौ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(११)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग शिवरंजनी—तीन ताल)

मेरा तन-मन सब तेरा ही, तू ही सदा स्वामिनी एक।
अन्योंका उपभोग्य न भोक्ता है कदापि, यह सच्ची टेक ॥
तन समीप रहता न स्थूलतः पर जो मेरा सूक्ष्म शरीर।
क्षणभर भी न विलग रह पाता, हो उठता अत्यन्त अधीर ॥
रहता सदा जुड़ा तुझसे ही, अतः बसा तेरे पद-प्रान्त।
तू ही उसकी एकमात्र जीवनकी जीवन है निर्भ्रान्त ॥
हुआ न होगा अन्य किसीका उसपर कभी तनिक अधिकार।
नहीं किसीको सुख देगा, लेगा न किसीसे किसी प्रकार ॥
यदि वह कभी किसीसे किंचित दिखता करता-पाता प्यार।
वह सब तेरे ही रसका बस, है केवल पवित्र विस्तार ॥
कह सकती तू मुझे सभी कुछ, मैं तो नित तेरे आधीन।
पर न मानना कभी अन्यथा, कभी न कहना निजको दीन ॥
इतनेपर भी मैं तेरे मनकी न कभी हूँ कर पाता।
अतः बना रहता हूँ संतत तुझको दुखका ही दाता ॥
अपनी ओर देख तू मेरे सब अपराधोंको जा भूल।
करती रह कृतार्थ मुझको, दे पावन पद-पङ्कजकी धूल ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(११)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

अहो प्रानप्यारी ! मेरी देह और मन—सब तेरौई है, तूही मेरी सदाँ एकमात्र स्वामिनी है। मेरौ ये सरीर और मन और काहू कौ काहू काल मैं न तौ उपभोग्य—भोगिवे की वस्तु है और न भोगिवेवारौ है—ये मेरी साँची टेक—प्रन है। मेरी देह स्थूलरूप ते तेरे ढिंग (सदाँ) नायँ रहै—ये साँची है। परंतु मेरौ जो ये सूच्छम सरीर है, वो एक छिनहू तोते विलग नायँ रहि सकै, (तेरे वियोग में) अत्यन्त अधीर—विकल है जाय है। ये सदा-सर्वदा तोही सौं जुर्यौ रहै है और यासौं तेरेई चरनन के ढिंग वस्यौ रहै है। कारन, तू ही वाके जीवन की जीवन—आधार है, यामें कोई भ्रम नायँ। वापै काहू दूसरे कौ काहू काल में रंचमात्र अधिकार नायँ हैसकै। वाते काहू कूँ सुख हू नायँ मिलिवे कौ और न वाकूँ काहू ते काहू प्रकार कौ सुख मिलि सकै है। जो कहूँ काहू छिन वो काहू सौं रंचमात्रहू प्यार करतौ अथवा पावतौ दीखै, तौ (समझि लेनौ चहिये कि) वो सब एकमात्र तेरेई रस कौ पवित्र विस्तार है, और कछू नायँ। तू मो कूँ जी चाहै सो कहि सकै है, मैं तौ सदा तेरे आधीन हूँ। परंतु मेरी या वात कूँ कवहूँ अन्यथा मत मानियौ और न अपने कूँ काहू छिन दीन कहियौ। इतनेहू पै मैं तेरे मन की कवहूँ नायँ करि पाऊँ। याही सौं मैं सदाँ तेरे लिएँ दुःख कौई कारन वन्यौ रहूँ हूँ। परंतु मेरी तौ तोसूँ या वीनती है कि तूँ अपने माऊँ कूँ देखि कैं मेरे सगरे अपराधन कूँ भूलि जा और मो कूँ अपने चरन-कमलन की पावन धूरि दैकैं कृतार्थ—निहाल करती रह।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१२)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग शिवरंजनी—तीन ताल)

तुमसे सदा लिया ही मैंने, लेती-लेती थकी नहीं।
अमित प्रेम-सौभाग्य मिला, पर मैं कुछ भी दे सकी नहीं ॥
मेरी त्रुटि, मेरे दोषोंको तुमने देखा नहीं कभी।
दिया सदा, देते न थके तुम, दे डाला निज प्यार सभी ॥
तब भी कहते—'दे न सका मैं तुमको कुछ भी, हे प्यारी!
तुम-सी शीलगुणवती तुम ही, मैं तुमपर हूँ बलिहारी' ॥
क्या मैं कहूँ प्राणप्रियतमसे, देख लजाती अपनी ओर।
मेरी हर करनीमें ही तुम प्रेम देखते, नन्दकिशोर! ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१२)
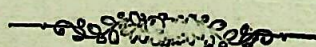
श्रीराधाके प्रेमोद्गार--श्रीकृष्णके प्रति

हे प्रानेस्वर ! तुम ते सदा मैंने लियौई लियौ है, लैती-लैती मैं काहू छिन थकी—अघाई नायँ। तुम ते मो कूँ अपार प्रेम और सौभाग्य मिल्यौ, परंतु मैं तुम कूँ कछू नायँ दै सकी। मेरी त्रुटि अथवा दोस तुमने कबहूँ नायँ देखे, तुम सदाई दियौ करे, देते-देते कबहूँ थके—अघाए नायँ, अपनौ सगरौ प्यार मो कूँ दै डारयौ। याऊ पै तुम कहौ हौ कि 'हे प्यारी ! मैं तो कूँ कछू नायँ दै सक्यौ। तुम्हारे-जैसी सील-सुभाव और गुनवारी नागरी एक तुम ही हौ, मैं तुम पै बलिहारी—न्योछावर हूँ।' मैं अपने प्रान-प्रियतम तुम ते कहा कहूँ, मैं अपने माऊँ कूँ जब देखूँ तौ लाज के मारैं गड़ि जाऊँ हूँ। प्यारे नंदकिसोर ! (मैं कहा कहूँ) मेरी प्रत्येक करनी में तुम कूँ प्रेम केई दरसन होय हैं। (ये तुम्हारी प्रेममई दृष्टिकौ चमत्कार है !)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१३)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग बागेश्री—तीन ताल)

राधे ! तू ही चित्तरञ्जनी, तू ही चेतनता मेरी ।
तू ही नित्य आत्मा मेरी, मैं हूँ बस आत्मा तेरी ॥
तेरे जीवनसे जीवन है, तेरे प्राणोंसे हैं प्राण ।
तू ही मन, मति, चक्षु, कर्ण, त्वक्, रसना, तू ही इन्द्रिय-घ्राण ॥
तू ही स्थूल-सूक्ष्म इन्द्रियके विषय सभी मेरे सुखरूप ।
तू ही मैं, मैं ही तू, बस, तेरा-मेरा सम्बन्ध अनूप ॥
तेरे बिना न मैं हूँ, मेरे बिना न तू रखती अस्तित्व ।
अविनाभाव विलक्षण यह सम्बन्ध, यही बस, जीवन-तत्त्व ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१३)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

प्यारी राधे ! तूही मेरे चित्त कौ रंजन करिवैवारी है—नायँ-नायँ, तूही मेरी चेतनता है—तेरी ही सत्ता ते मैं चेतन वन्यौ भयौ हूँ। तूही मेरी सनातन आत्मा है और मैं तेरी आत्मा हूँ—याते अधिक और कहा कहूँ। तेरे जीवन सौंई मेरौ जीवन है और तेरे प्रानन सौंई मेरे प्रान टिके भए हैं। मेरौ मन, बुद्धि, नेत्र, कान, त्वचा, रसना और घ्राणेन्द्रिय (नासिका) तू ही है। मेरी स्थूल एवं सूक्ष्म इंद्रीनके सुखरूप विषय तू ही है। तू ही मैं है, मैं ही तू हूँ। वस, तेरौ और मेरौ सम्बन्ध निरालौ—अद्वितीय है। तेरे बिना मेरी कछू हस्ती नायँ और मेरे बिना तेरौ कछू अस्तित्व नायँ। तेरौ-मेरौ ये अनौखौ अविनाभाव सम्बन्ध है—मेरे बिना तू और तेरे बिना मैं नायँ रहि सकूँ। वस, येई जीवन कौ तत्व—सार है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१४)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग बागेश्री—तीन ताल)

तुम अनन्त सौन्दर्य-सुधा-निधि, तुममें सब माधुर्य अनन्त ।
तुम अनन्त ऐश्वर्य-महोदधि, तुममें सब शुचि शौर्य अनन्त ॥
सकल दिव्य सद्गुण सागर तुम लहराते सब ओर अनन्त ।
सकल दिव्य रस निधि तुम अनुपम, पूर्ण रसिक, रसरूप अनन्त ॥
इस प्रकार जो सभी गुणोंमें, रसमें अमित, असीम, अपार ।
नहीं किसी गुण-रसकी उसे अपेक्षा कुछ भी, किसी प्रकार ॥
फिर, मैं तो गुणरहित सर्वथा, कुत्सित-गति, सब भाँति गँवार ।
सुन्दरता-मधुरता-रहित, कर्कश, कुरूप, अति दोषागार ॥
नहीं वस्तु कुछ भी ऐसी, जिससे तुमको मैं दूँ रस-दान ।
जिससे तुम्हें रिझाऊँ, जिससे करूँ तुम्हारा पूजन-मान ॥
एक वस्तु मुझमें अनन्य, आत्यन्तिक, है विरहित उपमान ।
'मुझे सदा प्रिय लगते तुम', यह तुच्छ किंतु अत्यन्त महान ॥
रीझ गये तुम इसी एक पर, किया मुझे तुमने स्वीकार ।
दिया स्वयं आकर अपनेको, किया न कुछ भी सोच-विचार ॥
भूल उच्चता, भगवत्ता सब, सत्ताका सारा अधिकार ।
मुझ नगण्यसे मिले तुच्छ बन, स्वयं छोड़ संकोच-सँभार ॥
मानो अति आतुर मिलनेको, मानो हो अत्यन्त अधीर ।
तत्त्वरूपता भूल सभी, नेत्रोंसे लगे बहाने नीर ॥
हो व्याकुल, भर रस अगाध, आकर शुचि रस-सरिताके तीर ।
करने लगे परम अवगाहन, तोड़ सभी मर्यादा धीर ॥
बढ़ी अमित, उमड़ी रस-सरिता पावन, छायी चारों ओर ।
डूबे सभी भेद उसमें, फिर रहा कहीं भी ओर न छोर ॥
प्रेमी, प्रेम, परम प्रेमास्पद—नहीं ज्ञान कुछ, हुए विभोर ।
राधा प्यारी हूँ मैं, या हो केवल तुम प्रिय नन्दकिशोर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१४)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

हे प्रानप्यारे ! तुम सौंदर्यरूप सुधाकी अनन्त निधि हौ, तुम में सब प्रकार कौ अनन्त माधुर्य भरयौ है। तुम ऐस्वर्य केऊ अनन्त महासागर हौ और तुम्हारे भीतर सब प्रकारकी पवित्र सूर-वीरताहू अनन्तरूप में भरी है। सम्पूर्ण दिव्य श्रेष्ठ गुनन के अनन्त सागररूप तुम सब दिसान मैं लहरायौ करौ हौ। तुम सम्पूर्ण अलौकिक रसन की निधि हौ, अनुपम एवं पूर्ण रसिक हौ और अनन्त रसरूप हौ। या प्रकार सौं जो सम्पूर्ण गुनन में तथा रस में परिमानरहित, सीमा-रहित और अपार होय, वाकूँ काहू गुन अथवा रस की काहू प्रकार ते नैकहू अपेच्छा—चाह अथवा प्रयोजन नायँ हैसकै। याके विपरीत मैं तौ सब प्रकार ते गुनहीन, बेढंगी एवं सब तरह सौं गँवारिनि हूँ। सुन्दरता, मधुरता कौ मोमें नाम-निसानहू नायँ। इतनौई नायँ, मैं कठोर सुभाव की, अत्यन्त कुरूपा और दोसन की घर हूँ। मोपै ऐसी कोई वस्तु नायँ, जासौं मैं तुम कूँ रस—आनन्द दै सकूँ, जासौं मैं तुम कूँ रिझाय सकूँ, जासौं मैं तुम्हारी पूजा करि सकूँ, तुम्हारौ सम्मान करि सकूँ। हाँ, एक तुच्छ परंतु अत्यन्त गौरव की वस्तु मोपै अवस्य ऐसी है, जो काहू दूसरे पै नायँ, जाकौ अन्त नायँ हैसकै और जाकी बराबरी कोई नायँ करि सकै। वो येई है कि तुम मो कूँ सदा प्यारे लगौ हौ। याई एक वस्तु पै तुम रीझि गए और तुमने मो कूँ अंगीकार कर लियौ। यापै तुमने स्वयं आय कैं अपने आप कूँ मोकूँ दै दीनौ, कछू सोच-विचार नायँ कीनौ। अपनी सम्पूर्ण महानता, भगवत्ता एवं सत्ता कौ सगरौ अधिकार भूलि कैं और संकोच कौ बोझा उतारि कैं तथा परवा छोड़ि कैं स्वयं तुच्छ बनि कैं तुम मो नगन्य—नाचीज सूँ या प्रकार मिले मानौं कोई मिलिबे के ताईं अत्यन्त आतुर—उतावरौ और अधीर होय। या प्रकार अपनी तत्वरूपता—वास्तविक सर्वरूपता कूँ भूलि कैं नेत्रन ते आसूँ बहायबे लगे। इतनौई नायँ, ब्याकुल है कैं अगाध रस भरि कैं तथा पवित्र रस की सरिता के तीर पै आय कैं सब प्रकारकी मरजादा एवं धीरज कौ बाँध सर्वथा तोरि कैं वा रस-नदी में तुम गहरे गोता लगायबे लगे। वा समै पावन रस की सरिता अपार रूप में बढ़ि गई और उमड़ि कैं चारयो ओर छाय गई—ब्याप्त हैगई। सब प्रकार के भेद-भाव वाकी गहिराई मैं डूबि गए—विलीन हैगए और वा रस-सरिता कौ कहूँ ओर-छोर नायँ रह्यौ। प्रेमी, प्रेम और परम प्रेमास्पद कौ भेदग्यान नैकहू नायँ रह्यौ और तुम विभोर (बाह्यज्ञानशून्य) हैगए। वा समै तुमकूँ येऊ ग्यान नायँ रहि गयौ कि केवल मैं तुम्हारी राधा प्यारी हूँ अथवा केवल मेरे प्रियतम तुम नंदकिसोर ही हौ। (केवल मैं रह गयी हूँ या केवल तुम ही हौ—या बात कौऊ भान नायँ रह्यौ)।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१५)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

(राग भैरवी—तीन ताल)

राधा ! तुम-सी तुम्हीं एक हो, नहीं कहीं भी उपमा और ।
लहराता अत्यन्त सुधा-रस-सागर, जिसका ओर न छोर ॥
मैं नित रहता डूबा उसमें, नहीं कभी ऊपर आता ।
कभी तुम्हारी ही इच्छासे हूँ लहरोंमें लहराता ॥
पर वे लहरें भी गाती हैं एक तुम्हारा रम्य महत्त्व ।
उनका सब सौन्दर्य और माधुर्य, तुम्हारा ही है स्वत्व ॥
तो भी उनके वाह्य रूपमें ही बस, मैं हूँ लहराता ।
केवल तुम्हें सुखी करनेको सहज कभी ऊपर आता ॥
एकछत्र स्वामिनि तुम मेरी अनुकम्पा अति बरसाती ।
रखकर सदा मुझे संनिधिमें जीवनके क्षण सरसाती ॥
अमित नेत्रसे गुण-दर्शन कर, सदा सराहा ही करती ।
सदा बढ़ाती सुख अनुपम, उल्लास अमित उरमें भरती ॥
सदा, सदा मैं सदा तुम्हारा, नहीं कदा कोई भी अन्य—
कहीं जरा भी कर पाता अधिकार दासपर सदा अनन्य ॥
जैसे मुझे नचाओगी तुम, वैसे नित्य करूँगा नृत्य ।
यही धर्म है, सहज प्रकृति यह, यही एक स्वाभाविक कृत्य ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१५)

श्रीकृष्णके प्रेमोद्गार—श्रीराधाके प्रति

प्यारी राधा ! तुम्हारे-जैसी तौ तुम ही हौ, और कहूँ तुम्हारी समता नायँ। तुम्हारे भीतर सुधा-रस कौ अनन्त सागर लहरायौ करै है, जाकौ कहूँ ओर-छोर नायँ दीखै। वामें मैं सदा डूब्यौ रहूँ हूँ, कबहूँ उतराऊँ नायँ। काहू छिन तुम्हारी इच्छा तेई (ऊपर आय कैं) तरंगनमें मैं लहराँवतौ रहूँ हूँ। परंतु वे तरंगहू एक तुम्हारेई परम रमनीय महत्त्व कौ गान कर्यो करैं हैं, विन लहरन कौ सगरौ सौंदर्य तथा माधुर्य एकमात्र तुम्हारी ही सम्पत्ति है। ताहू पै विन के बाह्य रूपमें मेंई मैं लहरातौ रहूँ हूँ, केवल तुम कूँ सुखी करि करिवे के ताँई ही काहू छिन सहजरूप ते मैं उतरायवे लगूँ हूँ। मेरी एकछत्र स्वामिनी ! तुम मोपै अपार दया बरसाँवती रहौ हौ और मो कूँ सदा अपने समीप राखि कैं जीवन के छनन कूँ सरसाँवती रहौ हौ। अपने अनन्त नेत्रन ते मोमें गुन देखि कैं सदा मो कूँ सराह्यौ करौ हौ तथा अनुपम रस की धारा बहाँवती एवं हृदय में अपार उल्लास भरती रहौ हौ। सदा-सदा मैं सदा तुम्हारौ हूँ, तुम्हारे या नित्य अनन्य दास पै कहूँ कोऊ दूसरौ कबहूँ रंचमात्रहू अधिकार नायँ करि सकै। जा प्रकार ते मोय तुम नचाओगी, मैं वाई प्रकार ते सदा नाच्यौ करूँगौ। येई मेरौ धर्म है, येई मेरौ सहज सुभाव है और येई मेरौ स्वाभाविक कर्म है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
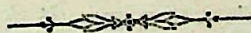
(१६)

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

(राग भैरवी तर्ज—तीन ताल)

तुम हो यन्त्री, मैं यन्त्र, काठकी पुतली मैं, तुम सूतधार ।
तुम करवाओ, कहलाओ, मुझे नचाओ निज इच्छानुसार ॥
मैं करूँ, कहूँ, नाचूँ नित ही परतन्त्र, न कोई अहंकार ।
मन मौन—नहीं, मन ही न पृथक्; मैं अकल खिलौना, तुम खिलार ॥
क्या करूँ, नहीं क्या करूँ—करूँ इसका मैं कैसे कुछ विचार ?
तुम करो सदा स्वच्छन्द, सुखी जो करे तुम्हें, सो प्रिय विहार ॥
अनबोल, नित्य निष्क्रिय, स्पन्दनसे रहित, सदा मैं निर्विकार ।
तुम जब जो चाहो, करो सदा बेशर्त, न कोई भी करार ॥
मरना-जीना मेरा कैसा ? कैसा मेरा मानापमान ?
हैं सभी तुम्हारे ही, प्रियतम ! ये खेल नित्य सुखमय महान ॥
कर दिया क्रीडनक बना मुझे निज करका तुमने अति निहाल ।
यह भी कैसे मानूँ-जानूँ, जानो तुम ही निज हाल-चाल ॥
इतना मैं जो यह बोल गयी, तुम जान रहे—है कहाँ कौन ?
तुम ही बोले भर सुर मुझमें मुखरा-से, मैं तो शून्य मौन ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीराधाके प्रेमोद्गार—श्रीकृष्णके प्रति

हे प्रियतम ! तुम यन्त्र के चालक हौ, मैं यन्त्र हूँ; मैं काठ की पूतरी हूँ, तुम सूत्रधार—पूतरी कूँ नचायवेवारे हौ। तुम अपनी इच्छा के अनुकूल मोते क्रिया करवायो तथा बुलवायो एवं अपने इसारे पै नचायो करौ हौ। मैं तुम्हारे आधीन हैकैं सदा क्रिया करती, बोलती तथा नाचती रहूँ हूँ; मेरे भीतर कोई अहंकार—मैंपनौ नायँ। मेरौ मन सर्वथा मौन—क्रियाहीन हैगयौ है—नायँ-नायँ; मेरे मन की अलग सत्ताई नायँ रही—तुम्हारौ मन ही मेरौ मन बनि रह्यौ है। मैं तौ अचिन्त्य—(काहू की धारणा में नायँ आवै, ऐसो) खिलौना हूँ, तुमही वाकूँ खिलायवेवारे हौ। मोकूँ कहा करनौ चहिये और कहा नहीं करनौ चहिये, यापै मैं कैसैं कछू बिचार करूँ। तुम ही स्वयं सोचि कैं, जासौं तुम कूँ सुख होय, ऐसो तुम कूँ प्यारौ लगिवेवारौ बिहार—तुम्हारी रुचि कौ खेल तुम स्वच्छन्दता ते (काऊ तरह कौ संकोच न करि कैं) नित्य करते रहौ। मैं तौ सदा अनबोल—बोलिबे में असमर्थ, क्रियाहीन, चेष्टासून्य (हिलिबे डोलिबे मैंहूँ अशक्त) तथा बिकाररहित (प्रतिक्रियासून्य) हूँ। तुम जा खन जो कछू करनौ चाहौ, सोई सदाँ करयो करौ —मेरी आड़ी सूँ कोई सर्त अथवा करार नायँ है। मेरे ताईं मरिवो-जीवौ कैसौ और मान अपमानहू कछू अर्थ नायँ राखै। हे प्रियतम ! ये सगरे तुम्हारेई महान् सुखमय नित्य के खेल हैं। तुमने अपने हाथ कौ खिलौना बनाय कैं मोकूँ अत्यन्त निहाल करि दीनौ है। येऊ मैं कैसैं मानूँ अथवा जानूँ। अपनौ हालचाल तुम ही जानौ (कारन, तुम ही सब कछू करौ-कराऔ हौ)। इतनी बात जो मैं कहि गई, सोऊ तुम जानौ हौ कि कौन कहाँ पै है। साँची बात तौ ये है कि मोमें सुर भरि कैं तुम ही मुखरा-जैसे बने बोले हौ। मैं तो बाचालता ते सून्य, मौन हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(पुष्पिका)

महाभाव-रसराजके मधुर मनोहर भाव।
दिव्य, मधुरतम, रागमय, दैन्य विभूषित चाव॥
दोनों दोनोंके लिये सहज सभी कर त्याग।
सुखद परस्पर बन रहे, छलक रहा अनुराग॥
दोनों दोनोंके सदा प्रेमी-प्रेष्ठ महान।
नित्य, अनन्त, अचिन्त्य, शुचि, अनिर्वाच्य रसखान॥
सुख-दुख दोनों ही सुखद, प्रियतम-सुखके हेतु।
अन्य सभी टूटे सहज मिथ्या निजसुख-सेतु॥
राधा-माधव-प्रेम-रस वाचा-चित्त-अतीत।
करते शाखाचन्द्र-से इङ्गित सोलह गीत॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलनेका पता

गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri